निजबीजं बीजं लज्जाबीजं शक्तिः। वर्ण-न्यासादि दक्षिणवत्। ध्यानन्तु।
"खड्गाद्भिन्नेन्दुखण्डस्रवदमृतरसाप्लाविताङ्गी त्रिनेत्रा।
सव्ये पाणौ कपालोद्गलदसृजमथो मुक्तकेशी पिबन्ती।
दिग्वस्त्रावद्धकाञ्चीमणिमयमुकुटाद्यैर्युता दीप्त-जिह्वा
पायान्नीलोत्पलाभा रविशशिविसत्कुण्डला-लीढ़पादा॥"
एवं ध्यात्वा दक्षिणावत् सर्व्वं कार्य्यम्। पुरश्चरणन्तु एकविंशतिसहस्रजपः॥*॥ क्रीँ क्रीँ क्रीँ ३॥*॥ क्रीँ क्रीँ क्रीँ स्वाहा। ५॥*॥ क्रीँ क्रीँ क्रीँ फट स्वाहा। ६॥*॥ क्रीँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ स्वाहा। ८॥*॥ ऐँ नमः। क्रीँ ऐँ नमः। क्रीँ कालिकायै स्वाहा। १४॥*॥
एतस्याः पूजाप्रयोगः। अस्य दक्षिणा मूर्त्ति-ऋषिः पंक्तिच्छन्दः कालिका देवता। ध्यानन्तु
"चतुर्भुजा कृष्णवर्णा मुण्डमालाविभूषिता।
खड्गञ्च दक्षिणे पाणौ बिभ्रतीन्दीवरद्वयम्॥
कर्त्तृञ्च खर्परञ्चैव क्रमाद्वामेन बिभ्रती।
द्यां लिखन्तीं जटामेकां बिभ्रती शिरसाद्वयी॥
मुण्डमालाधरा शीर्षे ग्रीवायामथ चापराम्।
वक्षसा नागहारञ्च बिभ्रती रक्तलोचना॥
कृष्णवस्त्रधरा कट्यां व्याघ्राजिनसमन्विता।
वामपादं शवहृदि संस्थाप्य दक्षिणं पदम्॥
विलाप्य सिंहपृष्ठे तु लेलिहाना शवं स्वयम्।
साट्टहासा महाघोररावयुक्ता सुभीषणा॥"
ध्यानमेवं अन्यत् सर्व्वं दक्षिणावत्। पुरश्चरणं लक्षद्वयजपः। अन्यासां मन्त्रवर्णसंख्यलक्ष-जपः॥*॥ क्रीँ क्रीँ क्रीँ दक्षिणे कालिके स्वाहा॥११॥ क्रीँ हूँ क्रीँ दक्षिणे कालिके फट्। १०॥*॥ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ दक्षिणे कालिके क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ स्वाहा।२०
एतासां दक्षिणा मूर्त्तिऋषिः पंक्तिच्छन्दो दक्षिण कालिका देवता।अन्यत् सर्व्वं दक्षिणावत्॥*॥ क्रीँ स्वाहा ३। भैरवोऽस्य ऋषिः॥*॥ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ स्वाहा। ८॥*॥ क्रीँ हूँ क्रीँ स्वाहा।५। अस्य पञ्चवक्त्र ऋषिः॥*॥ क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ स्वाहा।९॥* क्रीँ दक्षिणे कालिके स्वाहा। ९॥*॥ क्रीँ॥ हूँ क्रीँ क्रीँ हूँ क्रीँ स्वाहा। ८॥*॥ क्रीँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ स्वाहा। १६॥*॥ नमः ऐँ क्रीँ क्रीँ कालिकायै स्वाहा। ११॥*॥ नमः आँ आ क्रीँ क्रीँ फट् स्वाहा कालि कालि हूँ। १४॥*॥ एतासां ऋष्यादिकं पूजादिकञ्च दक्षिणावत्। पुरश्चरणं लक्षजपः॥*॥ अथ गुह्यकालिकामन्त्राः। क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ गुह्ये कालिके क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ स्वाहा। २१॥*॥ क्रीँ हूँ क्रीँ गुह्ये कालिके क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ स्वाहा। १६॥*॥ क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ गुह्ये कालिके स्वाहा। १४॥*॥ क्रीँ हूँ क्रीँ गुह्ये कालिके हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ स्वाहा। १४॥*॥ क्रीँ हूँ क्रीँ दक्षिणे कालिके हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ स्वाहा। १५॥*॥ हूँ क्रीँ गुह्ये कालिके क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ स्वाहा १५॥*॥ क्रीँ गुह्ये कालिके क्रीँ स्वाहा। ९॥*॥ क्रीँ दक्षिणे कालिके क्रीँ स्वाहा। १०॥*॥ एतासां सर्वं पूर्ववत्। बलिमन्त्रस्तु। एह्येहि जगन्मातर्ज्जगतां जननि गृह्ण गृह्ण मम बलिं सिद्धिं देहि देहि शत्रुक्षयं कुरु कुरु क्रूँ क्रूँ क्रीँ क्रीँ फट् फट् ॐ कालि कार्य नमः फट् स्वाहा॥*॥ यद्वा गुह्यकाल्या अयं मन्त्रः। एह्येहि गुह्यकालि मम बलिं गृह्ण गृह्ण मम शत्रून् नाशय नाशय खादय खादय स्फुर स्फुर छिन्धि छिन्धि सिद्धिं देहि देहि क्रूँ फट् स्वाहा॥*॥ अथ भद्रकाल्यादिमन्त्राः क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ भद्रकाल्यै क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रूँ क्रूँ स्वाहा।२०।*॥ क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ श्मशानकालि क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ स्वाहा।२१॥*॥ क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ महाकालि क्रीँ क्रीँ क्रीँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ स्वाहा।२०॥*॥
एतासां पूजादिकं दक्षिणावत्। ध्यानन्तु।
"महामेघप्रभां देवीं कृष्णवस्त्रपिधायिनीम्।
ललज्जिह्वां घोरदंष्ट्रां कोटराक्षीं हसन्मुखीम्॥
नागहारलतोपेतां चन्द्रार्द्धकृतशेखराम्।
द्यां लिखन्तीं जटामेकां लेलिहानां शवं स्वयम्॥
नागयज्ञोपवीताङ्गीं नागशय्यानिषेदुषीम्।
पञ्चाशन्मुण्डसंयुक्तवनमालां महोदरीम्॥
सहस्रफणसंयुक्तमनन्तं शिरसोपरि।
चतुर्दिक्षु नागफणावेष्टितां गुह्यकालिकाम्॥
तक्षकसर्पराजेन वामकङ्कणभूषिताम्।
अनन्तनागराजेन कृतदक्षिणकङ्कणाम्॥
नागेन रसनाहारकल्पितां रत्ननूपुराम्।
वामे शिवस्वरूपन्तं कल्पितं वत्सरूपकम्॥
द्विभुजां चिन्तयेद्देवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्।
नरदेहसमाबद्धकुण्डलश्रुतिमण्डिताम्॥
प्रसन्नवदनां सौम्यां नवरत्नविभूषिताम्।
नारदाद्यैर्म्मुनिगणैः सेवितां शिवमोहिनीम्।
साट्टहासां महाभीमां साधकाभीष्टदायिनीम्॥"
गुह्यकाली इत्युपलक्षणम्॥*॥भद्रकालीमन्त्रा-न्तरम्।
"प्रसादबीजमुद्धृत्य कालीति पदमुद्धरेत्।
महाकालीपदं चोक्त्वा किलियुग्मं ततः परम्॥
अस्त्रमग्निप्रियान्तोऽयं भद्रकाल्या महामनुः॥"
ॐ कालि महाकालि किलि किलि फट् स्वाहा॥*॥ ध्यानं यथा,—
"क्षुत्क्षामा कोटराक्षी मसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदन्ती
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनलशिखासन्निभं पाशयुग्मं
दन्तैर्ज्जम्बूफलाभैः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली॥"
अस्याः पुरश्चरणादिकं दक्षिणकालीतन्त्रवत्। इति केचित्॥ वस्तुतस्तु पुरश्चरणमष्टोत्तर-सहस्रजपः। इति कृष्णानन्दकृततन्त्रसारः॥*॥
श्मशानकालीमन्त्रादिकं तच्छब्दे द्रष्टव्यम्॥*॥
अथ दीपन्विताश्यामापूजा। यामले।
"कार्त्तिके मासि कृष्णायां पञ्चदश्यां महानिशि पूजयेत् योऽतियत्नेन काली विद्या प्रसीदति॥
मृण्मयीं प्रतिमां कृत्वा महाकालीं प्रपूजयेत्॥"
व्योमकेशसंहितायाम्।
"तुलार्के यस्त्वमावास्यां निशार्द्धे घोरदक्षिणाम पूजयेद्विधिवद्भक्त्या सर्व्वसिद्धीश्वरो भवेत्॥" इति
एवञ्च अर्द्धरात्रं पूजाया मुख्यकालः। स च कालो यद्युभयदिने तदा पूर्व्वदिने पूजा। यथा तत्रैव।
"तत्रोभयदिने शस्तकाले भूतयुता यदि।
उमा माहेश्वरी सा च तिथिः सिद्धिप्रदा सताम्॥
बलिदानं बलितिथावात्मनाशकरं परम्।
ततस्तत्र न कर्त्तव्यं बलिदानविसर्ज्जने॥
मन्त्रसिद्धिकरं तत्र परेऽह्नि जपसाधनम्।
रात्रौ पूजा प्रकर्त्तव्या रात्रावेव विसर्ज्जनम्।
प्रकाशे सिद्धिहानिः स्याद्गोपने सिद्धिरुत्तमा॥"
तथा कालीकल्पे।
"तुलार्के बहुले पक्षे पञ्चदश्यां महेश्वरीम्।
यथोपचारैः संपूज्य महानिशि नृपो भवेत्।
शनिभौमदिने चेत् स्यात्ततः शतगुणं फलम्॥
तत्रोभयदिने भूतयुक्तकुह्वां महानिशि॥
इमां यात्रां कारयित्वा चक्रवर्त्ती भवेन्नृपः॥"
इति॥
महेश्वरीं दक्षिणकालीं तत्प्रकरणोक्तत्वात्॥*।
कार्त्तिकामावास्यायां कालीपूजाहेतुमाह विश्व-सारे।
"कार्त्तिके कृष्णपक्षे तु पञ्चदश्यां महानिशि।
आविर्भूता महाकाली योगिनीकोटिभिः सह॥
अतोऽत्र पूजनीया सा तस्मिन्नहनि मानवैः।
बलिपूजादिकं सर्व्वं निशायां क्रियते तु यत्।
तत्तदक्षयतां याति काली विद्या प्रसीदति॥"
महानिशि अर्द्धरात्रे। तथा च उत्तरकामाख्या-तन्त्रे।
"शरत्काले च देवेशि दीपयात्रादिनेऽपि च।
अमावास्यां समासाद्य मध्यरात्रौ विचक्षणः॥
मृण्मयीं पुत्तलीं कृत्वा दीपादिभिरलङ्कृताम्।
बलिं नानाविधं दद्यात् वाद्यभाण्डसमन्वितम्।
नृत्यगीतं कौतुकञ्च यावत् सूर्य्योदयं भवेत्।
प्रातःकाले शुद्धतोये स्थापयेदरिनाशिनीम्॥"
इति॥
एतेनास्या दीपयात्राप्यर्द्धरात्रे बोध्या। आवि-